कवि प्रभात के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर में विद्यावाचस्पति की उपाधि हेतु

शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधार्थी

आनन्द पाराशर

ENROLL No – jvr-II/ 22/11041

शोध निर्देशक

डॉ आनन्द राय

हिन्दी विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) 2022

Synopsis

शोध – रूपरेखा

सत्र– सितम्बर 2022

Formate for Outline (Synopsis) of Proposed Research Work

विद्यावाचस्पति उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

1. शोधार्थी का नाम : आनन्द पाराशर
   Name of Scholar : Anand Parashar
2. शोध का शीर्षक : कवि प्रभात के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन
   Tital of research : kavi Prabhat ke kavya ka samikshatmak Adhyayan
3. स्थान : हिन्दी विभाग
   ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
   Location : Department of Hindi Jyoti vidhyapeeth woman's University Jaipur
4. शोध निर्देशक : डॉ आनन्द राय
   ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
   Supervisor : Dr. Anand ray
   Jyoti vidhyapeeth woman's University Jaipur

कवि प्रभात के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तावित शोध का परिचय एवं महत्व

(Introducation and Improtance of the proposed Investigation)

सृष्टि के प्रारम्भ से ही जबसे मुनष्य ने रहन सहन शुरू किया तब से असंख्य परिवर्तन दृष्ट्रिगोचर होते है। कोई क्षेत्र ऐसा शेष नहीं है जहाँ परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ है। कविता एंव साहित्य समाज का दर्पण है जो काल चक्र की गति को दिखाने का कार्य करता है। युगीन संदर्भ को भविष्य की संभावनाओं के संग व्यक्त करना ही साहित्य का प्रमुख मर्म होता है।

यदि हम साहित्य एवं समाज के चरण को समझना प्रारम्भ करे तो हम जानेंगे कि साहित्य की कला किस भांति समाज में परिवर्तन से बदलती रही है। आदि काल में कवि का ध्येय भिन्न होता था जहां समाज भिन्न भिन्न प्रवृत्तियों से गुजर रहा था, उसे श्रृंगार वीरता से लेकर विभिन्न क्षेत्रों का उल्लेख करना पडता था। भक्ति काल हताशा निराशा से लेकर भक्ति के उच्च सोपान तक कविता गोते लगाते हुए अनुभूत होती है। जहां तुलसी, सुर, जायसी इत्यादि विद्वानों ने यथार्थ आदर्श को लिपिबद्व करने का कार्य किया था। रीति काल में श्रृंगार का प्राधान्य होने से कवियों की लौकिक दृष्टि श्रृंगार पर आबद्व हो चुकी थी। आधुनिक कालखण्ड में कविता में व्यापक परिवर्तन हुआ। कविता धर्म मन्दिर से निकलकर एक आम लघु व्यक्ति की ओर भी स्फूरित होने लगी। तब से लेकर 21 वीं सदी तक कविता अपने यथार्थ स्वरूप को अधिक प्रखर रूप में व्यक्त कर रही है।

यथार्थ से स्मरण हुआ कि परिवर्तन की व्यापकता ने हमारे सामान्य जीवन को भी अतिरेक से प्रभावित किया है। शिक्षा व्यवस्था के परिवर्तन ने परिवार व्यवस्था में वृह्द अन्तर को जन्म दे दिया है। सयुक्त परिवार कल्पना में निहित है। एकल परिवार व्यवस्था ने महानगरीय नवीन संस्कृति को पोषित किया है।

गांवो का विस्थापन शहरों की ओर निरन्तर बढ़ता जा रहा है। गांव अब खाली हो रहे है। यहां मानव के अतिरिक्त मानवेत्तर प्राणियों में भी इस हलचल की सुगबुगाहट हैं। असंख्य कवियों ने इन भाव बोधों को यथा स्वरूप स्थान देने का प्रयास

अपनी लेखनी के माध्यम से किया है। अरूण कमल, ऋतुराज, लीलाधर जंगुडी, नन्दकिशोर आचार्य, आलोक धन्वा, अनुज लुगुन इत्यादि कवि आज भी सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, पारिवारिक आदि परिस्थियों में हो रहे परिवर्तनों को अपनी कविताओं के माध्यम से चित्रित करने का कार्य कर रहे है। इन कविंयों में कुछ कवि ऐसे भी है जो अपने निकट अत्यन्त सूक्ष्म परिवर्तन को भी कविताओं के माध्यम से व्यक्त कर रहे है। ग्राम खेत खलिहान से लेकर गाय, भैंस गोबर तक का जिक्र कर रहे है। साथ ही ग्राम जीवन की लौकिक अभिव्यक्ति में हो रहे परिवर्तन को व्यापक स्तर पर व्यक्त कर रहे है। इसी क्रम में कवित प्रभात का नाम चिर स्मरणीय है।

प्रभात शान्त चित्त होकर एंकान्त भाव से अपने हृदय के विषयों को गहराई से शब्द प्रदान करते चले जा रहे है। जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म परिवर्तन को भी अपनी कविताओं में व्यक्त कर रहें है। भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद से गांवों की आत्मा घायल एवं विक्षिप्त हुई है। उसका जिक्र इनकी कविताओं के एक एक शब्द में निहित है। कविता पुनः ग्रामीण क्षैत्र की ओर लौटी है। इनकी कविताओं में खेत, किसान, ग्रामीण महिला, गरीबी से लेकर आत्म वेदना, बेबसी एवं कटाक्ष का स्वर मुखरित हुआ है। 'अपनों मे नहीं रह पाने के गीत' काव्य संग्रह वस्तुतः विस्थापन एवं प्रवास से पीड़ित गांवो में घर परिवार बचपन, नातेदारी एवं स्वजनों की चिंताओं का अश्रु सागर है।

गांवो के खाली होने से कल का किसान देवता आज मजदूर बन गया है। यहां पर 'वे किसान' कविता के माध्यम से किसानो के विस्थापन की पीड़ा को कवि के द्वारा व्यक्त किया गया है। यथा

''कहां गायब हो गये थे किसान

जिनकी झोली में नहीं आया इस बरस

मुठ्ठी भर भी धान

....

....

धरती खा गयी उन्हें कि निगल गया आसमान

कहां अलोप हो गये वो किसान''

इसी प्रकार किसानों को भूमंडलीकरण के इस भयावह दौर में विस्थापन की चिन्ता सता रही है। जिसका जिक्र कवि प्रभात अत्यन्त सूक्ष्म तरीके से करते है। यथा :—

''यही भय दिया जाता था उन्हें बार बार

छिन ली जाएगी उनकी धरती

विस्थापित कर दिया जाएगा उन्हें

भेज दिया जाएगा निर्वासन में''

स्पष्ट है कि विकास एवं प्रगति के इन खोखले दावों ने किसानों को दो कदम आगे कर चार कदम पिछे कर दिया है। प्रभात पूर्णतः जीवित बिम्ब विधान से इसे शब्दों का स्वरूप प्रदान करते रहे है। विवरण सूक्ष्म तथापि बयानी सपाट रूप में निकल कर समक्ष आती है। धरोहर, वे परिवार दूर के, प्रशासन इत्यादि कविताएं अनुपम एवं अद्वितीय रस का प्रकटीकरण करती है। झाड़ृ जैसे आम शब्द को रचनात्मकता में स्थापित करने का महत्ती कर्म सपन्न करना प्रणम्य है। यथाः—

'' झाडू एक संकलन है

एक कविता संकलन

जैसे कविताओं की पंक्तियां सिरजती है

एक कवि के हृदय में

वनस्पति के हृदय ने सिरजी है

झाडू की ये सीके ''

'डाँगरा' कविता में बूढे बैल की करूण कथा को अत्यन्त करूण तरीके से कवि द्वारा व्यक्त किया गया है। वही 'अनुष्ठान' में परम्परा पर प्रहार करने का प्रयास भोग की खीर के माध्यम से किया गया है। यथा :–

" भोग के लिए खीर रान्धी जा रही थी वहाँ निर्जन मे ं

बरगद तले के पंचायत भवन से उठकर आये

कुछ पंच पटेल थे वहाँ

....

....

पत्थर की मूर्तियों द्वारा खीर न खाया जाना

आग में डलने के बाद खीर का राख हो जाना

जले की गन्ध का महमहाना"

कवि प्रभात द्वारा ग्रामीण जन जीवन, लौक संस्कृति, विस्थापन की पीड़ा, स्त्री चिन्तन, आत्म वेदना, कुरीतियों पर प्रहार, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, किसानों की हृदयगत पीड़ा, मानवेत्तर जीवों की पीड़ाओं से लेकर निर्जीव वस्तुओं की महत्व स्थापना का युग बोध कार्य किया है। साथ साथ बाल मनोविज्ञान के दृष्टिकोण को ध्यान रखते हुए बच्चों के लिए अत्यन्त सुन्दर कविताओं की रचना भी की है। यथा :–

सांभर झील से भराया भैरू मारवाडी ने

बंजारा नमक लाया ऊँटगाड़ी में

बर्फ जैसी चमक

चॉद जैसी बनक

चॉदी जैसी ठनक

अजी देसी नमक

देखो ऊँटगाड़ी में

बंजारा नमक लाया ऊँटगाड़ी में।

इस प्रकार कवि प्रभात की बाल कविताओं का संसार अत्यन्त विशाल है जिसमें जीव जन्तु, प्रकति, पेड़ पौधे, एवं खिलौने बच्चों के संग खलते हुए नजर आते है।

आज मानवीय रिश्ते अपनी पम्परागत महिमा को धूमिल कर रहे है। रिश्तों ने एक नवीन करवट ले ली है। साम्प्रदायिकता एवं भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। ग्रामीण लोक जीवन एवं किसानों का आनन्द अपन परिवर्तन की बयार में दुःख एवं पीड़ाओं से दम तोड रहा है। गांव के गांव विस्थापित होकर शहर में घूस गये है। तब लौकिक परम्पराओं एवं स्थानीय जीवन को जान पाना भविष्य की पीढ़ी के लिए अत्यन्त दुर्लभ होगा। अतः उक्त सभी बिन्दुओं की अनुपालना में प्रस्तावित शोध का महत्व स्वतः ही बढ जाता है। करूणा जो प्रभात की कविताओं का हृदय है। इस करूणा का जानना आवश्यक है। एक संवेदना जो प्रभात की पुकार है वह इस शोध के महत्व को स्वतः ही बढा देती है। यथा :–

जिन्हें माँ की याद नहीं आती

उन्हें माँ की जगह किसकी याद आती है ?

जिन्हें बहन की याद नहीं आती

उन्हें बहन की जगह किसकी याद आती है ?

याद नहीं आती जिन अभागों को अपने बाबा की

उन्हें बाबा की जगह किसकी याद आती है ?

शोध का उद्देश्य

(Objective of the proposed research)

कवि प्रभात के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने से विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति होगी जो निम्नानुसार हैः–

1. कवि प्रभात की काव्य प्रतिभा से सृजित काव्य संसार जो अद्वितीय है को सम्पूर्ण जन मानस के समक्ष लाना। इनकी काव्य संवेदनाओं से आम पाठक को अवगत करवाना प्रधान उद्देश्य है।
2. कवि प्रभात की काव्य रचनाओं के शिल्पगत जगत को सूक्ष्म तरीके से जानना।
3. ग्रामीण जीवन की सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित करवाना।
4. लोग जीवन की जानकारी का विवेचन।
5. स्त्री जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं एवं संवेदनाओं से परिचित होना।
6. किसानों की दुर्दशा के कारणों पर मन्थन करना।
7. गांवो का शहरों की ओर हो रहे प्रवास के कारणों एवं प्रक्रियाओं को समझना।
8. खेत–खलिहान एवं पेड़–पौधों के लौकिक परिवेश से परिचित होना।
9. बाल कविताओं के अध्ययन एवं शोध से बाल मनोविज्ञान एवं संवेदनाओं को समझना।
10. आधुनिकता के इस परिवेश में निर्मित बेबसी, वेदना, दुःख, आशा–निराश, यांत्रिकता, पुंजीवाद, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता के पहलुओं का विवेचन करना।
11. कवि की स्वयंगत वेदना के विभिन्न तत्वों का विवेचन करना।
12. घरेलु रोजमर्रा के सामानो के माध्यम से जीवन बोध को समझना।
13. राजस्थान की लोक संस्कृति से परिचित करवाना।

पूर्व में किये गये कार्य का अवलोकन

(Review of literature)

शोध कार्यो को प्रारम्भ करने से पूर्व पहले किये गये कार्यो से परिचित होना आवश्यक है। किन्तु कवि प्रभात के काव्य संसार पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तावित शोध पूर्णतः नवीन एवं रचनात्मक है। कवि प्रभात जो जमीनी स्तर से जुड़े है। जिनका काव्य संसार अपने आप में अद्वितीय है। साथ ही अब तक अप्रकाठ्य रहा है, वो पूर्णतः नवीन दृष्टिकोण से सबके समक्ष आ सकेगा।

प्रस्तावित शोध कार्य में पूर्ववर्ती शोध के अन्तराल का अंकन

(Research gaps identified in the proposed feld of investigations)

प्रस्तावित शोध कार्य ''कवि प्रभात के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन'' इस पर है। उक्त विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। शोध की दृष्टि से यह पूर्णतया नवीन विषय है। अतएव मेरा यह शोध कार्य पूर्णरूप से नवीन एवं मौलिक होगा जो हिन्दी साहित्य में इस विषय की रिक्तता को पूर्ण करेगा।

प्रधान परिकल्पना

(Mejor hypothesis)

आधुनिक पूंजीवाद के ज्वार भाटे में सम्पूर्ण जन–जीवन व्यापक स्तर तक प्रभावित हो रहा है। मनुष्य मात्र से लेकर मानवेत्तर जीव सबका जीवन परिवर्तन हो रहा है। ग्रामीण जीवन, शहरी चकाचौंध, रिश्तो में परिवर्तन, लोक जीवन एवं रीति रिवाजों का टुटना इत्यादि घटित हो रहा है।

कवि प्रभात ने ग्रामीण जीवन के केन्द्र किसान, खेत–खलिहान से लेकर वहां के पेड़–पौधों एवं पशु–पक्षियों तक का जिक्र किया है। लोक जीवन की परम्पराओं से लेकर बदलते रिश्तों की बानगी को प्रस्तुत किया है। स्त्री विमर्श के आधार की नब्ज को गहराई से समझकर शब्दों का स्वरूप प्रदान किया है। कवि प्रभात ने परम्पराओं की मरणासन्न अवस्था से लेकर ना जाने अनगिनत विषयों को जन मानस के समक्ष रखा है।

अतः मेरे प्रस्तावित शोध विषय ''कवि प्रभात के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन'' के माध्यम से ऊपर उल्लेखित विषयों के मर्म को स्पष्ट करना है। साथ कवि प्रभात की संवेदना एवं करूणा से परिचित होना है।

अनुसंधान पद्वतियाँ एवं शोध विधि

(Research methodology)

''कवि प्रभात के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन'' उक्त विषय के व्यापक अनुसंधान के लिए अनेकानेक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। जो निम्नानुसार हैः–

1. कवि प्रभात के साहित्य का अध्ययन किया जाएगा।
2. कवि प्रभात से व्यक्तिगत सम्पर्क कर मौलिक सामग्री संकलन का यथा संभव प्रयास किया जाएगा।
3. उक्त विषयों से संबंधित अध्ययन करने वाले विभिन्न विद्वान, लेखको एवं आलोचको से व्यक्तिगत साक्षात्कार, अनुसूचियां एवं प्रश्नावली के माध्यम से तथ्य एकत्रित किये जायेगें।
4. आलोच्य साहित्य का अध्ययन करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालय ओर प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित साहित्य का अध्ययन किया जाएगा।
5. साहित्यिक संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में भाग लेकर तथ्य एकत्रित किये जायेगे।
6. साहित्य के अनुसंधान के लिए प्रयुक्त, प्रचलित, सभी वैज्ञानिक शोध प्रविधियों द्वारा शोध को अन्तिम रूप दिया जाएगा।
7. विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति को अपनाते हुए वर्णनात्मक एवं समीक्षात्मक शैली का प्रयोग किया जाएगा।

पुस्तकालय एवं शोध संस्थान

1. राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
2. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
3. राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
4. ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा

(Tentative chapterisation)

प्रथम अध्याय :– कवि प्रभात का संक्षिप्त परिचय

1.1 – व्यक्तित्व

1.2 – कृतित्व

द्वितीय अध्याय :– कवि प्रभात की बाल कविताओं की विशेषताएं

2.1 – जीव जन्तुओं पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.2 – पेड़ पौधो पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.3 – प्रकृति पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.4 – खिलौनों पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.5 – खेत– खलिहान पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.6 – फल–सब्जियों पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.7 – रिश्तों पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.8 – खाने पीने की सामग्री पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.9 – मेलें–त्योहार एवं उत्सव पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.10 – बाल संवेदनाओं पर आधारित बाल कविताओं की विशेषताएं

2.11 – अन्य

तृतीय अध्याय :– कवि प्रभात के काव्य में ग्राम विस्थापन, किसान दुर्दशा एवं स्त्री चित्रण

चतुर्थ अध्याय :– कवि प्रभात के काव्य में संवेदनाओं का चित्रण

4.1 – राजस्थान की लोक संस्कृति का चित्रण

4.2 – स्वयंगत वेदना का चित्रण

4.3 – यांत्रिकता का चित्रण

4.4 – दुःख की अभिव्यक्ति

4.5 – आशा का चित्रण

4.6 – लोक परिवेश का चित्रण

4.7 – ग्रामीण खेलो का चित्रण

4.8 – कुरीतियों का चित्रण

4.9 – राजस्थानी परिवेश की अभिव्यक्ति

4.10 – जातिवाद,साम्प्रदायिकता एवं भ्रष्टाचार पर प्रहार

4.11 – सामाजिक विद्रुपताओं पर आक्षेप

4.12 – घरेलु सामग्री एवं संवेदना

4.13 – मानवेत्तर संवेदना का चित्रण

4.14 – जीवन मूल्य बोध

4.15 – प्रेम व श्रृंगार का चित्रण

4.'16 – समस्याओं का चित्रण

4.17 – परम्परागत ग्रामीण जीवन शैली का चित्रण

4.18– पारिवारिक जीवन एवं संवेदना

4.19– मुत्यु एवं श्मशान का चित्रण

4.20– स्वार्थपरता का चित्रण

4.21– प्रकति चित्रण

4.22– अन्य

पंचम अध्याय :– कवि प्रभात के काव्य की शिल्पगत विशेषताएं

5.1 – भाषा

5.2 – मुहावरे एंव लोकोक्तियाँ

5.3 – बिम्ब विधान

5.4 – प्रतिक योजना

5.5 – अलंकार

5.6 – अन्य

षष्ठम अध्याय :– उपसंहार

1. संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जीवन के दिन : कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2020

2. अपनों में नहीं रह पाने का गीत : कविता संग्रह, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, वर्ष 2014

3. सम्पादन राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति डॉ सत्यनारायण : मोनोग्राफ राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, वर्ष 2014
4. आओ भाई खिल्लु : गीत कविता, जुगनू प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष 2022
5. पेड़ो की अम्मा : गीत कविता, जुगनू प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष 2022
6. लाईटनिग : बिग बुक, जुगनू प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष 2021
7. घुमन्तुओ का ढेरा : गीत कविता, एकलव्य भोपाल, वर्ष 2012
8. मेघ की छाया : गीत कविता, एकलव्य भोपाल, वर्ष 2011

सहायक ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य का संवेदनात्मक इतिहास – डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नगेन्द्र, डॉ हरदयाल सम्पादित
4. हिन्दी साहित्य का दुसरा इतिहास – डॉ बच्चन सिंह
5. आज का हिन्दी साहित्य – संवेदना और दृष्टि – रामदरश मिश्र

शब्दकोश

1. हिन्दी अग्रेंजी शब्दकोश – डॉ हरदेव बाहरी, राजपाल प्रकाशन
2. वृहद हिन्दी शब्दकोश – डॉ हरदेव बाहरी, राजपाल प्रकाशन
3. हिन्दी साहित्य कोश : डॉ धीरेन्द्र वर्मा – ज्ञानमण्डल प्रकाशन
4. आदर्श हिन्दी शब्दकोश : डॉ रामविलास शर्मा – कमल प्रकाशन
5. हिन्दी मुहावरा कोश : डॉ भोलानाथ तिवारी

पत्र पत्रिकाएं

1. राजस्थान पत्रिका (दैनिक)– पत्रिका समुह, जयपुर संस्करण
2. दैनिक भास्कर – भास्कर समुह, जयपुर संस्करण
3. दैनिक नवज्योति – नवज्योति समुह, जयपुर संस्करण
4. मधुमति (मासिक) – राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर
5. हंस (मासिक) – अक्सर प्रकाशन नई दिल्ली
6. समालोचन (वेब पत्रिका)